Learning Outcomes

मैथिली स्नातक

साहित्य एक ऐसा विषय है जिससे सभ्यता संस्कृति, इतिहास – पुराण, भूगोल समाजशास्त्र आदि विषयों का ज्ञान स्वतः हो जाता है। साहित्य मात्र ज्ञान का ही माध्यम नहीं बल्कि अभिव्यक्ति का साधन भी है। किसी भी विषय में ज्ञानार्जित कर उसे समुचित रूप में व्यक्त करना साहित्य ही सिखाता है। सही कारण है कि स्कूल, कॉलेजों के पाठ्यक्रम में साहित्य अनिवार्य विषय के रूप में रखा गया है।

मैथिली समस्त मिथिलांचल की मातृभाषा है। इसकी अपनी लिपि (तिरहुता/मिथिलाक्षर) अपना व्याकरण व अपना एक अति प्राचीन समृद्व साहित्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार आधुनिक भारतीय शिक्षा में मातृभाषा का अध्ययन अनिवार्य रखा गया है। स्नातक पाठ्यक्रम के अध्ययनोपरांत छात्र निम्नलिखित कौशल में सक्षम होते हैं –

LO 1. मिथिला का परिचयात्मक व्याख्या करने में।

LO 2. मैथिली साहित्य के विभिन्न विधाओं की व्याख्या करने में।

LO 3. मिथिला की एतिहासिक, समाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करने में।

LO 4. वर्णरत्नाकर, सिद्व– साहित्य , चर्यापद आदि की समीक्षा करने में।

LO 5. मध्यकालीन गीतावली के प्रभाव को व्यक्त करने में।

LO 6. विद्यापति के पदावली का पूर्वोत्तर राज्यों के साहित्यकारों पर पड़े प्रभाव को निरूपित करने में।

LO 7. मध्यकालीन नाटक यथा किर्तनिया नाटक, अंकिया नाटक के

लोकप्रियता व प्रभाव का मूल्यांकन करने में।

LO 8. भारोपीय भाषा परिवार में मैथिली के स्थान को रेखांकित करने में।

LO 9. मैथिली के उपभाषाओं का विश्लेषण करने में।

LO 10. मैथिली साहित्य के विभिन्न गध एवं पद्य लेखन का मूल्यांकन करने में।

LO 11. कथा एवं उपन्यास की समीक्षा करने में।

LO 12. आधुनिक कवि यथा चन्दा झा, यात्री जी, सीताराम झा, आरसी प्रसाद सिंह आदि के पद्यों का विश्लेषण करने में

LO 13. मैथिली साहित्य के कृतियों पर समीक्षात्मक निबंध लेखन में।

LO 14. मैथिली शब्दावलियों के सही उच्चारण करने में।

LO 15. मैथिली व्याकरण के अवधारणाओं को निरूपित करने में।

LO 16. अपने सृजनात्मक विचारों को अभिव्यक्त करने में।

LO 17. मैथिली साहित्य के गद्य लेखन के विविध रूप यथा कथा उपन्यास नाटक संस्मरण, यात्रा वृतांत, शब्दचित्र रेखा, चित्र में अंतर स्पष्ट करने में।

भारत सरकार के प्रतिष्ठित संस्थान साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्ति के पश्चात छात्रों में इस भाषा के प्रति रूचि पहले के अपेक्षा अधिक बढ़ी है। मैथिली विषय का अध्ययन कर छात्र विभिन्न प्रतिष्ठित पदों को सुशोभित कर रहे हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित होकर अपने गॉव, समाज, देश के संग मैथिली भाषा एवं साहित्य का मान बढ़ा रहे हैं।